IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तरी बिहार में नगरीय विकास

डॉ0 अजय कुमार अतिथि षिक्षक भूगोल विभाग, जनता कोषी महाविघालय, बिरौल, दरभंगा

परिचय :–

भारत के उत्तर पूर्वी भाग में गंगा नदी के उत्तरी छोर पर स्थित मध्यवर्ती गंगा नदी का मैदान ही मुख्य रूप से उत्तरी बिहार है। नेपाल उत्तरी सीमा, पष्चिम बंगाल पूर्वी सीमा और उत्तर प्रदेष पष्चिमी सीमा बनाती है। यह क्षेत्र 53,847 वर्ग किलोमीटर में फैली है। इस प्रदेष की कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 6 करोड़ है और प्रतिवर्ग किलोमीटर घनत्व 1250 व्यक्ति है। इस प्रदेष के अन्तर्गत 21 प्रषासनिक जिला–मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, षिवहर, पूर्वी चंपारण, पष्चिमी चंपारण, गोपालगंज, सीवान, सारण, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, वैषाली, दरभंगा, समस्तीपुर, पूर्णिया, कटिहार, किषनगंज, अररिया, बेगुसराय, खगड़िया, और भागलपुर जिले के नवगछिया अनुमण्डल आते है। यह सम्पूर्ण प्रदेष कृषि का क्षेत्र है और यहाँ खनिज संसाधनों का अभाव है।

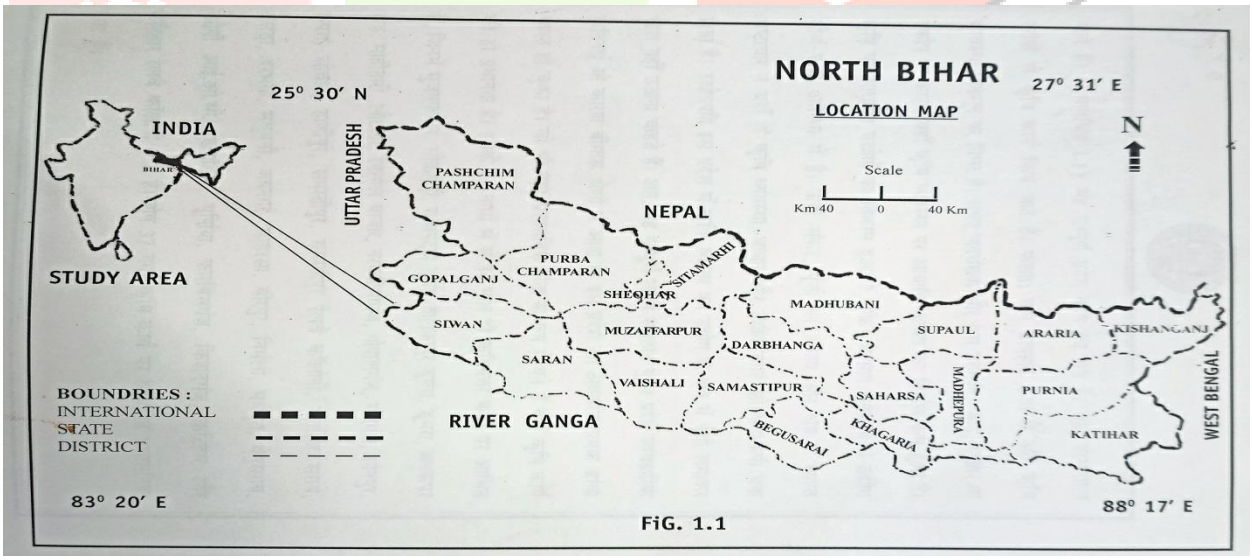

FiG. 1.1

बिहार आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा राज्य है। यहाँ कि 11.47 प्रतिषत जनसंख्या नगरों में रहती है। जबकि राष्ट्रीय नगरीय औसत 31.50 प्रतिषत है। उसमें भी उत्तरी बिहार, सम्पूर्ण बिहार की 64 प्रतिषत आबादी है और नगरीय जनसंख्या 7.20 प्रतिषत है। इससे स्पष्ट है कि इस क्षेत्र की अवसंरचनात्मक ढांचा, कृषि, उघोग, वाणिज्य, व्यापार, षिक्षा, रोजगार काफी पिछड़ा है और जनाधिवय एक समस्या है। निम्न उत्पादकता, अत्यधिक निर्भरता, मानसून आधारित कृषि, सिचाई का अभाव, पूँजी की कमी, तकनीकि षिक्षा के अभाव के कारण कृषि जीवन

निर्वाहक बन गयी है। इसे नये तरीके से प्रबन्धन कर कृषि का औघोगिकरण और व्यापारिकरण करने की जरूरत है।

अध्ययन का उद्देष्य

इस क्षेत्र में आज 78 नगर है। जिसमें प्रषासनिक नगर की बहुलता है। गैर कृषि कार्य पर आश्रित नगर 35 हैं। इस क्षेत्र में नगरीय विकास होने से निम्न उद्देष्य की पूर्ति हुयी है :–

1. नगरीय क्षेत्रों मे उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हुयी है।
2. अधिकतम सामाजिक आर्थिक समानता आयी है।
3. सामाजिक आर्थिक विकास में स्थानिकता को प्रोत्साहन मिला है।
4. नगर विकास को प्रर्यावरण योग्य बनाया जा रहा है।
5. नगर विकास प्रक्रिया में प्लानिंग, नियोजन से बड़े पैमाने पर तनकीकि संरलेषण हुआ है।

2. विधितंत्र

सम्पूर्ण क्षेत्र के अवलोकन के उपरान्त विष्लेषण एवं व्याख्या के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ो का प्रयोग किया गया है। अधिकांष आँकड़ें द्वितीयक है और जनगणना विभाग, पटना से प्राप्त है। नगरीय समस्या नियोजन टाउन प्लानिंग, गंदी बस्ती जलनिकासी की समस्या एवं सुझाव निरीक्षण अवलोकन के आधार पर उपजे विचार पर आधारित है।

संकल्पना :

उत्तरी बिहार का सम्पूर्ण नगर (बेगुसराय बरौनी को छोड़कर) गाँवों का ही विकसित रूप है। इसे नगरीय सांचे में ढालने का प्रयास किया जा रहा है। परन्तु सुविधा के अभाव में नगरीय विकास अधुरी है। इसके आधारभूत संकल्पना निम्न है :–

1. नगर को उघोगों का संतान कहा जाता है जिसका यहाँ अभाव है।
2. व्यापार के कारण नगर नहीं बने है।
3. गाँव ही बढ़ते–बढ़ते नगर बने है।
4. कुछ जगहों पर कृषि से जुड़े उघोगों के कारण नगर बने है।

परिकल्पनाएँ :

इस क्षेत्र में नगर का फैलाव, सागर में बूँद के समान है। अधिकांष नगर मध्यम् आकार–वर्ग के है। जिसके निम्न विषेषताएँ है :–

1. स्थान विषेष के अनुसार नगरीय पटना दृष्य में विविधता मिलती है।
2. बाजार कालिक विविधता के दर में अन्तर मिलता है।
3. प्रथम वर्ग के नगरीय केन्द्र का बृद्धि दर कम है। परंतु सर्वाधिक नगरीय आबादी इसी नगर में रहती है।
4. निकट भविष्य में कोई भी नगरीय केन्द्र महानगर बनने की स्थिति में नहीं है।
5. यहाँ सर्वाधिक प्रषासनिक नगर है।
6. नगरीय विकास की गति मंद है और वर्तमान समय में इसको प्रोत्साहित करने वाला कोई नहीं है।
7. क्रमबद्ध आकार वर्गानुसार नगर का अभाव है और असमान वितरण पाये जाते है।

नगरीय विकास

उस क्षेत्र का नगरीय इतिहास अति प्राचीन है। उदाहरण स्वरूप विष्व गणतंत्र की जननी वैषाली के नगर अवषेष है। आधुनिक नगरीकरण का प्रारंभ 1574 ई0 में महेष ठाकुर (राजस्वाधिकारी मुगल दरबार) द्वारा दरभंगा नगर के निर्माण के साथ ही शुरू हो जाता है। इससे पूर्व हाजी इलियास ने (14 वीं शताब्दी में) हाजीपुर, हुसैनषाह शर्की द्वारा (15 वीं शताब्दी में) छपरा नगर की नींव रखी थी। जो 18 वीं शताब्दी में नगर रूप में आयी। इसी समय अलावदी खाँ द्वारा 1726 ई0 में मोतिहारी और बेतिया नगर बसाया गया। इसी समय 1761 ई0 में मुजफ्फर अली द्वारा मुजफ्फरपुर नगर बसाया गया जो आज उत्तरी बिहार का ह्रदय स्थल है। विभिन्न जनगणना वर्षो में नगरों का विकास गति इस प्रकार है :–

तालिका 1.1

उत्तरी बिहार में नगरों का विकास

वर्ष	प्रथम वर्ग नगर	द्वितीय वर्ग नगर	तृतीय वर्ग नगर	चतुर्थ वर्ग नगर	पंचम वर्ग नगर	छठम वर्ग नगर	कुल नगर संख्या
1901	0	1	4	7	6	0	18
1911	0	1	3	8	6	0	18
1921	0	1	3	7	8	1	20
1931	0	1	3	8	8	0	20
1941	0	3	5	11	2	2	23
1951	0	3	7	13	8	2	33
1961	2	1	12	20	11	3	41
1971	2	4	15	23	8	3	55
1981	4	9	19	26	6	0	64
1991	5	10	33	24	3	0	75
2001	10	9	34	15	3	0	71
2011	10	10	36	18	4	0	78

स्रोत – सेन्सस ऑफ इण्डिया, बिहार पटना।

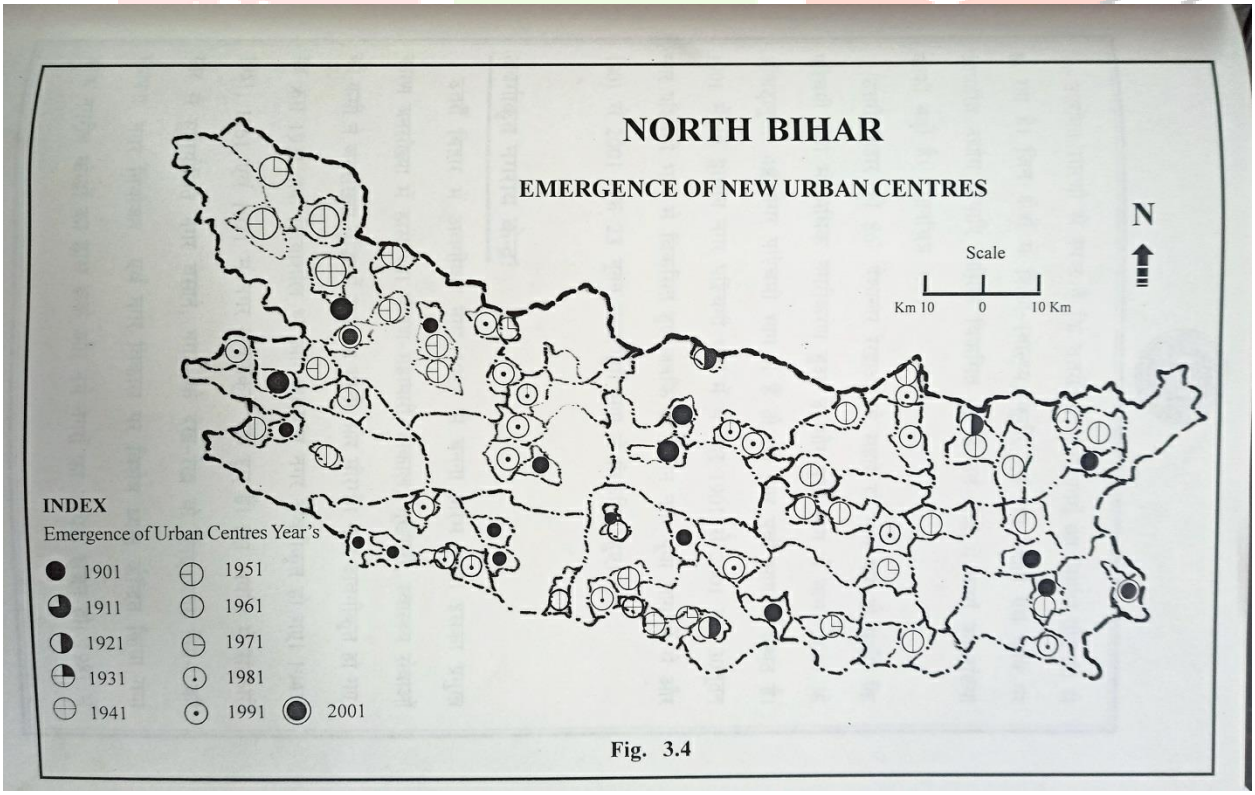

Fig. 3.4

इस नगरीय क्षेत्र में आकार वर्णानुसार जनसंख्या वितरण में काफी असमानता मिलती है। आँकड़े बताते है कि प्रथम वर्ग के नगर का आकार बढ़ रहा है और अन्य नगर अपना आकर्षण खोते जा रहे है।

तालिका 1.2

उत्तरी बिहार में आकार वर्गानुसार नगरीय जनसंख्या प्रतिषत

वर्ष	कुल जनसंख्या	प्रथम वर्ग	द्वितीय वर्ग	तृतीय वर्ग	चतुर्थ वर्ग	पंचम् वर्ग	छठम् वर्ग
1901	353924		18ण्72	38ण्88	26ण्79	15ण्69	.
1911	333923		18ण्76	33ण्49	32ण्64	15ण्11	.
1921	340496		16ण्76	31ण्03	30ण्64	20ण्02	1ण्55
1931	368990		16ण्44	32ण्10	33ण्64	17ण्82	.
1941	475680		37ण्53	25ण्14	31ण्62	3ण्86	1ण्86
1951	662110		33ण्64	30ण्00	27ण्70	8ण्14	0ण्53
1961	1047291	20ण्25	7ण्22	37ण्13	26ण्14	8ण्26	1ण्01
1971	1361168	18ण्99	18ण्93	32ण्52	23ण्76	4ण्98	2ण्83
1981	2107023	27ण्67	26ण्45	24ण्75	18ण्95	2ण्17	.
1991	2910909	29ण्09	25ण्29	32ण्58	12ण्32	0ण्72	.
2001	3563717	46ण्76	17ण्34	28ण्58	6ण्77	0ण्55	.
2011	4250560	53ण्30	20ण्15	18ण्75	7ण्15	0ण्65	.

स्रोत–सेन्सस ऑफ इण्डिया बिहार पटना।

इस उत्तरी बिहार के नगरीय क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर में काफी अन्तर है। बड़े नगर की संख्या वृद्धि दर कम है परंतु जनसंख्या सर्वाधिक है। आधी नगरीय जनसंख्या प्रथम् वर्ग के नगर में निवास करती है। इसका मुख्य कारण सुविधा साधन कम होना है। छोटे नगर गांव से पलायन कर प्रवासी बड़े नगरो में बसते है। छोटे नगरी की संख्या अधिक होती है। परंतु जनसंख्या वृद्धि दर में हास होता रहता है। 1960 के बाद से छोटे नगर की जनसंख्या घट रही है। संख्या है परंतु जनसंख्या का पलायन जारी है। इसका कारण सुविधा अभाव, कुटीर उघोग का हास, कृषि आधारित उघोग में गिरावट, निम्न जीवन स्तर, षिक्षा में गुणवता की कमी, स्वास्थ्य, परिवहन, सफाई, जलापूर्ति, विघुत एवं सीवर जल निकासी इत्यादि अनेक समस्याएँ है। जिससे इनका आकर्षण घट रहा है।

उत्तरी बिहार के 1.67 प्रतिषत भूमि पर नगरों का विस्तार है। जबकि 7.16 प्रतिषत जनसंख्या नगर में निवास करती है। सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व के नगर रोसरा और मधुबनी है। यहाँ 27 हजार व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक जनसंख्या घनत्व है। सबसे कम घनत्व वाला नगर बहादुरगंज (एक हजार व्यक्ति प्रति किमी) और बनमंखी बाजार (1300 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) है। सर्वाधिक क्षेत्रफल रखनेवाला वृहत नगर बगहा है। जो 46.83 वर्ग किलोमीटर में फैली है। जबकि सबसे छोटा नगर रोसरा है। जो मात्र 1.83 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर मुजफ्जरपुर है तो सबसे कम जनसंख्या वाला नगर रघुनाथपुर है। सर्वाधिक लिंगानुपात के नगर बिरौली (1026 व्यक्ति प्रति हजार) है तो सबसे कम लिंगानुपात के नगर लौठाटा (585 व्यक्ति प्रति हजार) है। सर्वाधिक साक्षर नगर रेलवे कॉलोनी समस्तीपुर 84 प्रतिषत डूमरा 78 प्रतिषत में मिलती है सबसे कम बहादुरगंज 34 प्रतिषत कटिया 43 प्रतिषत में मिलती है।

उत्तरी बिहार में म्युनिसिपल कॉरपोरेषन 2, म्युनिसिपलिटि–26, नोटिफायड एरिया कमिटि–39, सेक्टर टाउन–2, नगरीय एंग्लोमेरेषन–6, वाद्य–वृद्धि टाउन–3 और उपनगर क्षेत्र हैं।

नगरीय कार्य संरचना :–

उत्तरी बिहार के नगरीय लोगों के जीविका का मुख्य आधार व्यापार, प्रषासनिक सेवा, षिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, कृषि आधारित उघोग और बहुधंधी सेवा क्षेत्र का विस्तार ही आजीविका का साधन है। इस क्षेत्र प्रमुख 35 नगर गैर कृषि कार्य पर आश्रित है। जिसमें मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, राजोपट्टी, तालिकापुर डूमरा, डूमरा, जनकपुर रोड़, मोतीहारी, लौठाहा, खषैल बाजार, बेतिया, नरकटियागंज, गोपालगंज, मीरगंज, सोनपुर, छपरा, सीवान, हाजीपुर, समस्तीपुर, समस्तीपुर रेलवे कॉलोनी, दलसिंगसराय, रोसड़ा, दरभंगा, मधुबनी, जयनगर, सहरसा, बीरपुर, निर्मली, मधेपुरा, बेगुसराय, बरौनी आई0ओ0सी0, खगड़िया, पूर्णिया, किषनगंज, कटिहार, कटिहार रेलवे कॉलोनी और रघुनाथपुर है। शेष सभी नगर प्रषासनिक है जो सर्वाधिक है। इस क्षेत्र में प्रति दषाष्दी द्वितीयक व तृतीयक कार्य में लगे लोगों का प्रतिषत बढ़ रहा है। नगरीय कार्य कलापीय संरचना में श्रमिक 25.77ः सीमान्त श्रमिक 3.20ः और गैर श्रमिक 74.23ः है। कुल मुख्य श्रमिक में 42.91ः पुरूष और 6.40ः स्त्री कार्यषील है। कार्यषील संरचना में छोटे नगर और बड़े नगर के बीच आपसी प्रतिस्पर्द्धा और विरोधाभाष मिलता है। बड़े नगर में कार्यषील श्रमिकों का प्रतिषत छोटे नगरों से कम है। बड़े नगर में सीमान्त श्रमिक कम है तथा छोटे नगरों में अधिक है। बड़े नगरों में गैर श्रमिक अधिक मिलते है। कुल 25ण्77ः मुख्य श्रमिक में 6.29ः कृषक 15.65ः कृषक मजदुर, 4ण्67ः निर्माण उघ्झोग में लगे लोग है। सर्वाधिक 73ण्39ः आबादी अन्य कार्यो में संलग्न है।

इस क्षेत्र के नगर का अवसंरचनात्मक ढाँचा कृषि प्रधान है। कृषि आधारित उघोग, व्यापार, सेवा ही नगरीय आधार है। इसकी आत्मा ग्रामीण है और औघोगिक विकास की गति मंद है। व्यापार, कृषि उत्पाद की कम उत्पादकता और स्थानीय खपत से प्रभावित है। यहाँ को नगरीय जीवन निम्न स्तरीय है। विभिन्न पंचवर्षीय योजना के माध्यम से कृषि आधारित उघोग, व्यापार, वाणिज्य केन्द्र को विकसित करने की जरूरत है।

नगरीय समस्या :–

यहाँ का नगर अनेक समस्या से ग्रसित है। सर्वप्रथम जैविक सड़क विन्यास के आधार पर इनका निर्माण हुआ है। जिससे सड़क चौडीकरण, नाली निकाली, सीवर निर्माण में काफी परेषानी होती है। फिर उच्चावच बाढ़ के क्षेत्र होने से जल निकासी और साफ–सफाई में काफी दिक्कत होती है। इस विन्यास में महत्वपूर्ण इमारतें मुख्य केन्द्र में होती है। सड़के वक्राकार, खंडित, कम अधिक चौडी मार्ग परिवर्तनीय नदीं, झील, टीलायुक्त होती है। उत्तरी बिहार में स्थित 36 नगर नदी तट पर स्थित है और बाकी नगर मैदानी है। नगर का प्राचीन बसाव उच्चभूमि पर होता है। लेकिन बढ़ती जनसंख्या और प्रवास के फलस्वरूप निम्न भूमि पर बसाब हो जाने से बाढ़ के समय, वर्षाकाल में, जल–जमाब, जलनिकासी की समस्या तथा पर्यावरण स्वास्थ्य से जुड़े मामले बढ़ने लगते है। आवास, बिजली, यातायात, परिवहन उर्जा स्रोत, गैस, गंदी बस्ती, ने शहरी चकाचौध को कष्टप्रद बना दिया है।

नियोजन :–

1. नगर के मुख्य मार्ग को तीव्रपथ, मन्द गति वाहन पथ और पैदल पथ अलग–अलग चिन्हित होनी चाहिए। इससे सुरक्षा होती है। क्रांसिग पर रेड लाइट, ओवर ब्रीज, और नगर के सभी मार्ग एक–दूसरे से जुड़ा होनी चाहिए।

2. कल–कारखाने हरित पट्टी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

3. नगरों का कार्य क्षेत्र के आधार पर विभाजन होनी चाहिए।

4. स्तरा नुसार आवास कॉलोनी की व्यवस्था होनी चाहिए।

5. सार्वजनिक स्थानों, षिक्षा केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र, प्रषासनिक केन्द्र, व्यापारिक केन्द्र, परिवहन केन्द्र इत्यादि की व्यवस्था होनी चाहिए।

6. स्वच्छता सफाई जलनिकासी, जलापूर्ति और भावी नगर विकास का प्लान समाहित होनी चाहिए।

7. ऊर्जा, सुरक्षा, यातायात–परिवहन की सुविधा और नवसृजित रोजगार के अवसर ही नगर को जीवन्त बनाते है।

8. गंदी बस्ती के फैलाव को रोकना उनके बीच रोजगार श्रृजित करना ही आश्रित बदहाला दूर कर सकता है। तथा शहरी जीवन को सुखमय बना सकता है।

सुझाव :–

1. उत्तरी बिहार के नगरों का आर्थिक संरचना कृषि, व्यापार, उघोग, परिवहन का मिलाजूला रूप है। इसे गति प्रदान करने की जरूरत है।

2. यहाँ के नगर की मुख्य समस्या जल–जमाब, ट्राफिक जाम की है। जिसे सीवर निर्माण, ओवर ब्रीज बनाकर दूर किया जा सकता है। रिंग रोड़ निर्माण से शहरी दबाब को कम किया जा सकता है।

3. सड़क चौडीकरण, पैदल पथ, रोषनी प्रबन्ध सुरक्षा क्रासिंग लाइट एवं पार्किंग सुविधा से नगर की सुन्दरता बढ़ती है और सफाई नियमित होने से नगर स्वास्थ्य प्रद बनता है।

निष्कर्ष :–

उत्तरी बिहार का सभी नगर बाल्यावस्था में है तथा समस्या ग्रसित है। इसे औघोगिक व्यापारिक बनाकर ही सुदृढ़ और अधिक कार्य क्षमतायुक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ0 इनायत अहमद, बिहार का भूगोल, रांची पब्लिकेषन, रांची

2. डॉ0 विष्वनाथ प्रसाद, बिहार का भूगोल, वसुन्धरा पब्लिकेषन, पटना

3. सेन्सस ऑफ इण्डिया, बिहार पटना 1901–2011

4. जिला गजेटियर, बिहार पटना 1901–2011

5. सांख्यिकी विभाग से प्राप्त आँकड़े, बिहार सरकार, पटना

6. डॉ0 अजय कुमार ''षोध प्रबन्ध'' अप्रकाषित बी0आर0ए0 बिहार विष्वविघालय, मुजफ्फरपुर से प्राप्त जानकारी।

7. दैनिक समाचार पत्र – दैनिक जागरण, हिन्दूस्तान प्रभात खबर, दैनिक भास्कर से प्राप्त जानकारी।